SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छात्रों द्वारा वाणिज्य विषय के चयन का आधार : एक अध्ययन

अहिल्या तिवारी, (Ph.D.) अध्यापक शिक्षा संस्थान,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
अहिल्या तिवारी, (Ph.D.)अध्यापक शिक्षा संस्थान,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 13/05/2020
Revised on : -----
Accepted on : 20/05/2020
Plagiarism : 07% on 13/05/2020

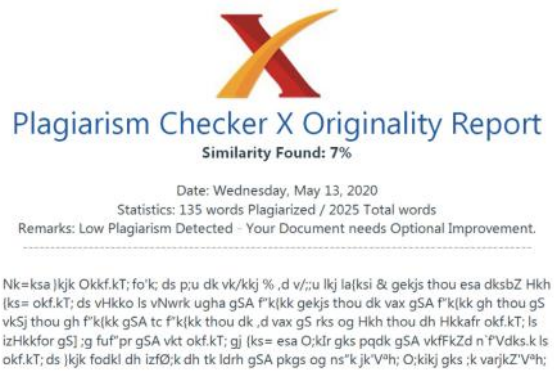
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 7%

Date: Wednesday, May 13, 2020
Statistics: 135 words Plagiarized / 2025 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Nk=ksa }kjk Okkf.kT; fo'k; ds p;u dk vk/kkj % ,d v/;;u lkj la{ksi & gekjs thou esa dksbZ Hkh {ks= okf.kT; ds vHkko ls vNwrk ugha gSA f"k{kk gekjs thou dk vax gSA f"k{kk gh thou gS vkSj thou gh f"k{kk gSA tc f"k{kk thou dk ,d vax gS rks og Hkh thou dh Hkkafr okf.kT; ls izHkkfor gS] ;g fuf"pr gSA vkt okf.kT; gj {ks= esa O;kIr gks pqdk gSA vkfFkZd n`f"Vdks.k ls okf.kT; ds }kjk fodkl dh izfØ;k dh tk ldrh gSA pkgs og ns"k jk'V"h; O;kikj gks ;k varjkZ'V"h;

शोध सारांश :–

हमारे जीवन में कोई भी क्षेत्र वाणिज्य के अभाव से अछूता नहीं है। शिक्षा हमारे जीवन का अंग है। शिक्षा ही जीवन है और जीवन ही शिक्षा है। जब शिक्षा जीवन का एक अंग है तो वह भी जीवन की भांति वाणिज्य से प्रभावित है, यह निश्चित है। आज वाणिज्य हर क्षेत्र में व्याप्त हो चुका है। आर्थिक दृष्टिकोण से वाणिज्य के द्वारा विकास की प्रक्रिया की जा सकती है। चाहे वह देश राष्ट्रीय व्यापार हो या अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सभी श्रेणीगत रूप से आते हैं। लोक व्यापारी हो या फुटकर व्यापारी, सभी को वाणिज्य का ज्ञान प्राप्त होना आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखकर शिक्षा में भी वाणिज्य विषय को शामिल किया गया है। वाणिज्य विषय में छात्रों की रूचि भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए वाणिज्य का ज्ञान एवं वाणिज्य के विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी छात्रों को होना आवश्यक है।

मुख्य शब्द :–

वाणिज्य, दृष्टिकोण, विभिन्नता, क्षमता, औसत, उपलब्धि, निर्विवाद।

प्रस्तावना :–

शिक्षा को मानव जीवन का आधार स्तंभ माना गया है। शिक्षा द्वारा ज्ञान एवं कला में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। शिक्षा मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाती है। शिक्षा उस विकास का नाम है जो इसी विकास के कारण अपनी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करता है, जीवन की विभिन्न समस्याओं को सुलझाता है और अपने कर्तव्यों का पालन करता है।

आज हम सब वैयक्तिक विभिन्नता के सिद्धांत को स्वीकार करते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार

प्रत्येक बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से एक–दूसरे से पृथक होता है। यदि हम केवल मानसिक योग्यताओं तथा क्षमताओं की बात करें तो कह सकते हैं कि प्रत्येक बालक की सामान्य बुद्धि तथा विशिष्ट योग्यताओं की मात्रा तथा संख्या पृथक होती है। एक प्रतिभावान छात्र भाषा कला में प्रवीण हो सकता है, उसके लिए यह आवश्यक नहीं होता है कि वह वाणिज्य का भी सफल छात्र हो। अतः आवश्यकता इस बात की है सर्वप्रथम छात्र की मानसिक योग्यताओं तथा क्षमताओं का पता लगाया जाए फिर उनके आधार पर ही छात्रों का समुचित चयन वाणिज्य विषयों का चयन करने के लिए किया जाना चाहिए। यदि व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर वाणिज्य के अध्ययन के लिए छात्रों का चयन करने से अनेक प्रकार की समस्याओं का उदय नहीं होता। इस प्रकार के छात्र समाज एवं राष्ट्र में उपयोगी नागरिक बनते हैं ।

वाणिज्य विषय के अध्ययन के लिए छात्रों का चुनाव करते समय छात्रों की रूचियों का भी पता लगाना चाहिए। जिन छात्रों ने वाणिज्य विषय का चुनाव किया है, उनमें वाणिज्य विषय के प्रति रूचि भी होनी चाहिए। यदि छात्रों में वाणिज्य विषय के प्रति रूचि का अभाव है, तो वह छात्र कभी भी वाणिज्य विषयों में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकता है। इसलिए वाणिज्य विषय का चयन करते समय यह भी पता लगाना उपयोगी है कि बालक में वाणिज्य विषयों के प्रति रूचि है अथवा नहीं। बालक में वाणिज्य विषयों के प्रति रूचि को रूचि मापनी द्वारा ज्ञात किया जा सकता है। सफल अध्यापक अपनी स्वयं की अभिरूचि मापनी निर्मित कर सकता है।

वाणिज्य विषयों के लिए छात्रों का चयन करते समय छात्रों की गत शैक्षिक उपलब्धियों तथा वर्तमान शैक्षिक स्तर का भी पता लगाना चाहिए। यदि बालक की गत उपलब्धियों तथा वर्तमान शैक्षिक स्तर औसत से अच्छा है, तभी उसे अध्ययन के लिए वाणिज्य विषय देना चाहिए। क्योंकि वाणिज्य विषय एक ऐसा विषय है जिसका अध्ययन हर छात्र सफलतापूर्वक नहीं कर सकता। वाणिज्य विषय के अध्ययन के लिए बालक को कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। इसमें पर्याप्त अभ्यास तथा सूझबूझ की भी आवश्यकता होती है। छात्र की गत उपलब्धियों का ज्ञान अध्यापक छात्र की पिछली कक्षाओं के द्वारा सहज ही कर सकता है तथा वर्तमान शैक्षिक स्तर का पता लगाने के लिए किसी अच्छी मापनी का प्रयोग कर सकता है।

अतएव यह निर्विवाद सत्य है कि व्यक्तियों में रूचि का कोई गुण होता है। इन रूचियों में व्यक्ति की शिक्षा में रूचि का स्थान महत्वपूर्ण होता है। जब तक किसी कार्य को करने के प्रति हमारे मन में रूचि नहीं होती, हम उस कार्य को सम्पूर्ण निष्ठा से नहीं करेंगे और अच्छे परिणाम प्राप्त नहीं होंगे। जब कोई व्यक्ति या छात्र प्रबंधक या अप्रेषक बनना चाहता है, तो यह तब तक संभव नहीं है जब तक वह उद्देश्य के अनुरूप विषय का चयन नहीं करेगा।

वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा का अधिक होना स्वाभाविक है और साथ ही इस प्रतिस्पर्धा के युग में वाणिज्य विषय का अध्ययन बहुत उपयोगी है। इसी विषय को आधार मानकर वाणिज्यिक तथा प्रबंधकीय ज्ञान संभव हो पाता है। यह जानते हुए भी कि वाणिज्य बहुत उपयोगी है, बहुत ही कम विद्यार्थियों द्वारा वाणिज्य विषय लिए जाने का मुख्य कारण है छात्रों में रूचि का न होना।

समाज की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्नति हो, परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति बालक की उन्नति पर निर्भर है। आधुनिक युग प्रबंधन का युग है। प्रबंध के अन्तर्गत वाणिज्य का ज्ञान लेना अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान शिक्षा बालक केन्द्रित है। इस शिक्षा में बालकों की रूचि व इच्छा का ध्यान रखा जाता है।

वाणिज्य का अर्थ :–

व्यापार का अर्थ है, क्रय और विक्रय दूसरे शब्दों में एक व्यक्ति (या संस्था) से दूसरे व्यक्ति (या संस्था) को सामानों को स्वामित्व का अन्तत्व समान सेवा या मुद्रा के बदले किया जाता है, उसे बाजार कहते हैं।

धन प्राप्ति के उद्देश्य से वस्तुओं का क्रय विक्रय करना ही वाणिज्य है। किसी उत्पादन या व्यवसाय का वह भाग जो उत्पादित वस्तुओं या सेवाओं के उनके उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं के बीच विनिमय से संबंध रखता है, वाणिज्य कहलाता है।

वाणिज्य के अन्तर्गत किसी आर्थिक महत्व की वस्तु जैसे समाज सेवा सूचना या धन को दो व्यक्ति या दो संस्थाओं के बीच सौदा किया जाता है। वाणिज्य पूंजीवादी अर्थव्यवस्था एवं अन्य अर्थव्यवस्थाओं का मुख्य वाहक है।

आरंभ में व्यापार एक समान के बदले दूसरा समान लेकर (वस्तु विनिमय) किया जाता था। बाद में अधिकांश वस्तुओं के बदले धातुएं मूल्यवान धातुएं, मूल्यवान वस्तुएं, सिक्का, हुण्डी अथवा मुद्रा से हुई। आजकल अधिकांश क्रय विक्रय मुद्रा (मनी) द्वारा होता है।

वाणिज्यवाद का मुख्य उद्देश्य विदेशी व्यापार को इस तरह से संगठित करना था, जिससे देश के अंदर दूसरे देशों से सोना एवं चांदी बराबर अधिक मात्रा में आती रहे। वाणिज्यवादी, सरकार द्वारा विदेशी व्यापार की ऐसी नीति निश्चित करना चाहते थे; जिससे देश के निर्यात की मांग देश के आयात से सदा ही अधिक रहे और दूसरे देश निर्यात की रकम को पूरा करने के लिए सोना बराबर भेजते हैं।

भारत में वाणिज्य का इतिहास :–

भूतकाल में भारत भी वाणिज्य संबंधी कार्यों में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। प्राचीन आर्यों की आर्थिक व्यवस्था का पता वैदिक साहित्य में लगता है। वैदिक काल में ही द्रविड़ तथा आर्य लोगों ने मिस्र, असीरिया और बेबीलोन से व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संबंध स्थापित किए।

ईसा के सैकड़ों वर्ष पूर्व से ही भारत में शिल्प और वाणिज्य का सर्वांगीण विकास हुआ। मुगल काल में भी भारत के गृह उद्योग उन्नत देश में थे और एशिया, यूरोप और अफ्रीका के अनेक देशों में यहां से तैयार माल जाता था।

प्रस्तुत शोधपत्र में छात्रों की वाणिज्य विषय में रूचि को जानने का प्रयास किया गया है। वाणिज्य विषय के चयन के आधार को भी पूछा गया है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि छात्रों ने किस आधार पर वाणिज्य विषय का चयन किया है। अर्थात् वाणिज्य विषय में उनको किस प्रकार से सफलता प्राप्त हो सकती है।

उद्देश्य :– छात्रों में वाणिज्य विषय के चयन के आधार का अध्ययन करना।

आँकड़ें :– प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है।

न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध में दुर्ग जिले के 5 उच्चतर माध्यमिक शालाओं से 100 ऐसे छात्रों का चयन किया गया है, जिन्होंने वाणिज्य विषय का चुनाव किया है।

आँकड़ों का विश्लेषण :– प्राप्त आँकड़ों को प्रतिशत के आधार पर दर्शाया गया है।

1. 35 प्रतिशत छात्रों ने वाणिज्य विषय का चयन माता–पिता की इच्छानुसार किया है, जबकि 65 प्रतिशत छात्रों ने स्वेच्छा से वाणिज्य विषय का चयन किया है।
2. 70 प्रतिशत छात्रों ने वाणिज्यिक युग होने के कारण वाणिज्य विषय लिया है, जबकि 30 प्रतिशत छात्र ऐसा नहीं मानते हैं।
3. 25 प्रतिशत छात्रों ने अपने मित्रों की वजह से वाणिज्य विषय लिया है, जबकि 75 प्रतिशत छात्रों ने अपनी अभिरूचि के आधार पर वाणिज्य विषय का चयन किया है।
4. 70 प्रतिशत छात्रों ने वाणिज्य विषय में एकाग्रता होने के कारण वाणिज्य विषय का चयन किया है, जबकि 30 प्रतिशत छात्रों को ऐसा नहीं लगता।

5. 75 प्रतिशत छात्रों ने व्यावसायिक प्रश्नों को हल करने में रूचि होने के कारण वाणिज्य विषय का चयन किया है, जबकि 25 प्रतिशत छात्र ऐसा नहीं मानते।
6. 55 प्रतिशत छात्रों ने गणित में कम अंक आने के कारण वाणिज्य विषय चयन किया है, जबकि 45 प्रतिशत छात्रों ने रूचि होने के कारण चयन किया है।
7. 60 प्रतिशत छात्र सोचते हैं कि वाणिज्य विषय से रोजगार मिलने में आसानी होती है, जबकि 40 प्रतिशत छात्रों को ऐसा नहीं लगता।
8. 60 प्रतिशत छात्रों को वाणिज्य विषय अन्य विषयों की अपेक्षा ज्यादा रोजगारपरक लगता है, जबकि 40 प्रतिशत छात्रों को ऐसा नहीं लगता।
9. 75 प्रतिशत छात्रों को वाणिज्य विषय व्यवसायमुखी लगता है, जबकि 25 प्रतिशत छात्रों को ऐसा नहीं लगता।
10. 70 प्रतिशत छात्रों को लगता है कि वाणिज्य विषय का पाठ्यक्रम समय पर समाप्त हो जाता है, जबकि 30 प्रतिशत छात्रों को ऐसा नहीं लगता।
11. 75 प्रतिशत छात्र वाणिज्य विषय की पढ़ाई नियमित करते हैं, जबकि 25 प्रतिशत छात्र नियमित नहीं करते।
12. 65 प्रतिशत छात्र वाणिज्य विषय के पाठ्यक्रम से पूर्णतः संतुष्ट है, जबकि 35 प्रतिशत छात्र संतुष्ट नहीं है।
13. 40 प्रतिशत छात्र मानते हैं कि वाणिज्य विषय बुद्धिमान छात्रों के लिए उपयुक्त है, जबकि 60 प्रतिशत छात्रों को ऐसा नहीं लगता।
14. 70 प्रतिशत छात्र वाणिज्य विषय संबंधी चर्चा सहजता से कर लेते हैं, जबकि 30 प्रतिशत छात्र ऐसा नहीं कर पाते।
15. 80 प्रतिशत छात्रों को वाणिज्य विषय की पुस्तक आसानी से उपलब्ध हो जाती है, जबकि 20 प्रतिशत छात्र इससे असहमत हैं।
16. 70 प्रतिशत छात्रों ने वाणिज्य विषय में अभिरूचि व्यक्त की है और 30 प्रतिशत छात्रों ने अरूचि व्यक्त की है।
17. 70 प्रतिशत छात्रों को वाणिज्य विषय का कक्षा कार्य व गृहकार्य पसंद है, जबकि 30 प्रतिशत छात्रों को पसंद नहीं है।
18. 70 प्रतिशत छात्रों को वाणिज्य विषय का अध्ययन करने से संतुष्टि प्राप्त होती है, जबकि 30 प्रतिशत छात्रों को संतुष्टि का अनुभव नहीं होता है।
19. 60 प्रतिशत छात्र मानते हैं कि वाणिज्य विषय हर वर्ग के लिए उपयुक्त है, जबकि 40 प्रतिशत छात्रों को ऐसा नहीं लगता।
20. 60 प्रतिशत छात्र समस्या का समाधान स्वयं करते हैं, जबकि 40 प्रतिशत छात्र ऐसा नहीं कर पाते हैं।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि छात्रों ने वाणिज्य विषय का चयन अपनी रूचि से किया है। ऐसे छात्र जो वाणिज्य विषय के महत्व एवं वाणिज्य से संबंधित रोजगारों से परिचित है, जो वाणिज्य को ही अपना कैरियर बनाना चाहते हैं; वही छात्र इस विषय का चयन कर रहे हैं। जो आँकड़ें हमें प्राप्त हुए हैं, वे यह दर्शाते हैं कि छात्रों में इस विषय के प्रति रूचि एवं जिज्ञासा दोनों है। छात्रों ने विषय चयन

से पूर्व चयन के सभी आधारों का अवलोकन किया है। उन्हें यह प्रतीत होता है कि वर्तमान समय में जहाँ गणित एवं जीव–विज्ञान जैसे विषयों का चयन करने की होड़ लगी हुई है, वहाँ वाणिज्य विषय ही है जो अपने स्वतंत्र परिक्षेत्र का निर्माण करता है और रोजगार को किसी विषय की सीमा में न बांध कर रोजगार के चहुमुखी द्वार खोलती है।

सुझाव :– प्रस्तुत शोध पत्र में निम्न सुझाव दिए गए हैं :–

1. विद्यार्थियों को वाणिज्य में रूचि तथा अभिरूचि बढ़ाना।
2. विद्यार्थी को अपने अध्ययन के संबंध में हमेशा दूसरे पर निर्भर रहने की मनोवृत्ति से अलग रहना चाहिए।
3. अध्यापक को विषय के महत्व एवं उपयोगिता से बालक को अवगत कराना चाहिए, जिससे उस विषय के प्रति विद्यार्थियों में रूचि जागृत हो।
4. विद्यार्थियों का हमेशा वाणिज्य के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, इससे ध्यान केन्द्रित करने में सहायता मिलती है।
5. विद्यार्थियों को अपनी रूचि के अनुसार ही विषय का चयन करना चाहिए।
6. विद्यार्थियों को अपनी वाणिज्य रूचि के अनुसार प्रतियोगी परीक्षाओं का चुनाव करना चाहिए अन्यथा सफलता प्राप्त नहीं होगी।
7. विद्यार्थियों के जीवन में वाणिज्य का स्थान महत्वपूर्ण होता है, इसलिए विद्यालय में वाणिज्य के शिक्षण पर समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए।
8. पालकों को विद्यार्थियों के वाणिज्य विषय के अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण के निर्माण के लिए संभावित प्रयास एवं सहायता करनी चाहिए।
9. अभिभावकों को अपनी संतान की रूचि के अनुसार उचित संकाय में शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
10. विद्यार्थी जब संकाय का चुनाव करता है, तब शिक्षकों को उनकी रूचि के अनुसार उचित संकायों का चुनाव करने में मदद करनी चाहिए।
11. माता–पिता को अपने बच्चे की आदतों, रूचियों तथा अवगुणों को शिक्षकों को बताकर सहयोग देना चाहिए।

संदर्भ सूची :–

1. *भाग्यश्री (2016); उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में वाणिज्य विषय में रूचि का अध्ययन, पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय।*
2. *सिंह रामलोचन (2007); आर्थिक और वाणिज्य भूगोल, गया प्रसाद एंड संस, आगरा।*
3. *सिंह रामपाल (2005); वाणिज्य शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।*
4. *सीता बी. जी. (1972); वाणिज्य विषय में शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों द्वारा प्रभावित होने का अध्ययन, नेशनल कॉरपोरेशन, कचहरी रोड, आगरा।*
5. *ठाकुर आर. एस. (1972); उच्चतर माध्यमिक स्कूल के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, कर्ण सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन।*

****